529 P
H 95

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1187/10124

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 529

ओ३म्

एक अपूर्व ऐतिहासिक घटना

झांसी की रानी

लक्ष्मी बाई की वीरता

प्रभूदयाल डंडे वाले

भजनोपदेशक

तीसरी बार]

[मूल्य -)॥

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
529
13.12.71

* ओ३म् *

एक अपूर्व ऐतिहासिक घटना

झांसी की रानी

लक्ष्मीबाई की वीरता

प्रकाशक—

प्रभूदयाल डंडेवाले भजनोपदेशक

जलाली, जिला अलीगढ़।

(मौजूदा निवास स्थान देहली)

तीसरी बार]

[मूल्य ~)॥

891.431
L9772

॥ ओ३म् ॥

झांसी की रानी

(लेखिका—श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान)

(१)

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी ।
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरङ्गी को करने की सबने मन में ठानी थी ॥
चमक उठी सन् सन्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी ॥

(२)

कानपुर के नाना की मुंह बोली बहिन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी ।
नाना के सङ्ग पढ़ती थी वह नाना के सङ्ग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी ॥
वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद ज़बानी थीं,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी ॥

(३)

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार ।
नक़ली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना ख़ूब शिकार,
सैन्य घेरना दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार ॥

महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

(४)

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
व्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मी बाई झाँसी में।
राज महल में बजी बधाई खुशियां छाई झाँसी में,
सुभट-बुन्देलों की विरदावलि सी वह आई झाँसी में॥
चित्रा ने अर्जुन को पाया शिव से मिली भवानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

(५)

उदित हुआ सौभाग्य मुदित महलों में उजियाली छाई,
किन्तु काल-गति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई।
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियां कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई॥
निःसन्तान मरे राजा जी रानी शोक समानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

(६)

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अवसर अच्छा पाया।
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया॥
अश्रु-पूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,

बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

(७)

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था वह जब भारत आया ।
डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया ॥
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

(८)

छिनी राजधानी देहली की लखनऊ छीना बातों बात,
कैद पेशवा था बिठूर में हुआ नागपुर का भी घात ।
उदीपुर तंजोर, सितारा, करनाटक की कौन बिसात,
जबकि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ वज्र-निपात ॥
बङ्गाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

(९)

रानी रोईं रनिवासों में बेगम गम से थी बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार ।
सरे आम नीलाम छापते थे अङ्गरेजी अखबार,
नागपूर के जेवर ले लो लखनऊ के लो नौलख हार ॥
यों परदे की इज्जत परदेशी के हाथ बिकानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूबलड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

कुटियों में थी विषम वेदना महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान।
नाना धुन्दूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रणचण्डी का कर दिया प्रकट आह्वान॥

हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी॥

११

महलों ने दी आग झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी अन्तरतम से आई थी।
झांसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपूर, पटना ने भारी धूम मचाई थी।

जबलपुर कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी॥

१२

इस स्वतन्त्रता महायज्ञ में कई वीर वर आये काम,
नाना धुन्दूपन्त, तांतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम।
अहमदशाह मौलवी ठाकुर कुंवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम॥

लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुर्बानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी॥

१३

इनकी गाथा छोड़ चल हम झांसी के मैदानों में,

जहां खड़ी है लक्ष्मी बाई मर्द बनी मर्दानों में ।
लेफ्टिनेन्ट वौकर आ पहुँचा आगे बढ़ा जवानों में ।
रानी ने तलवार खींच ली हुआ द्वन्द असमानों में ॥

ज़ख्मी होकर वौकर भागा उसे अजब हैरानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी ॥

१४

रानी बढ़ी कालपी आई कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार ।
यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार ॥
विजयी रानी आगे चल दी किया ग्वालियर पर अधिकार ॥

अंग्रेजों के मित्र संधिया ने छोड़ी रजधानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी ॥

१५

विजय मिली पर अँग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अब के जनरल स्मिथ सम्मुख था उसने मुँह की खाई थी ।
काना और मन्दिरा सखियां रानी के सँग आई थीं,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी ॥

पर पीछे ह्यूरोज़ आगया हाय घिरी अब रानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी ॥

१६

तो भी रानी मारकाट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार ।
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आगये सवार,

रानी एक शत्रु बहुतेरे होने लगे वार पर वार ॥
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

(१७)

रानी गई सिधार ! चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।
अभी उम्र कुल तेइस की थी मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी॥
दिखागई पथ सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

(१८)

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारत वासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतन्त्रता अविनाशी।
होवे चुप इतिहास लगे सच्चाई को चाहे फांसी,
हो मदमाती विजय मिटादे गोलों से चाहे झांसी॥
तेरा स्मारक तू ही होगी, तूही खुद अमर निशानी थी,
बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

"प्रताप" से

राष्ट्रीय-झण्डा ।

बिजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झँडा ऊँचा रहे हमारा ।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला ॥
वीरों को हरषाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा ॥ १ ॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में
कांपे शत्रु देखकर मनमें, मिट जावे भव संकट सारा ॥ २ ॥
इस झंडे के नीचे निरभय लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥ ३ ॥
आओ प्यारे वीरों आओ देश धर्म पर बलि २ जाओ
एक साथ सब मिल कर गाओ प्यारा भारत देश हमारा ॥ ४ ॥
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे ।
विश्व मुग्ध करके दिखलावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥ ५ ॥

सर फ़रोशी की तमन्ना ।

(ले०—बिस्मिल)

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है ॥
रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मंज़िल में है ॥
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां ।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है ॥
आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार बार ।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार ।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है ॥
अब न अगले बलवले हैं और न अरमानों की भीड़ ।
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है ॥

पुष्प—हृदय ।

चाह नहीं है सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूँ हार में ललचाऊँ ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डालाजाऊँ ।
चाह नहीं है देवों के सिर चढ़ूँ भाग्य पर इतराऊँ ॥
मुझे तोड़ कर हे बनमाली,
उस पथ में देना तू फेंक ।
मातृ भूमि हित शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

मौत से मत डरो ।

बुजदिलों को ही सदा मौत से डरते देखा ।
गो कि सौ बार उन्हें रोज़ ही मरते देखा ॥
मौत से वीर को हमने नहीं डरते देखा ।
तख्तए मौत पै भी खेल ही करते देखा ॥
मौत इकबार जब आना है तो डरना क्या है ।
हम सदा खेल हीं समझा किये मरना क्या है ॥
वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद ।
हमारा क्या है अगर हम रहें रहें, न रहें ॥

एक निर्वासित का विलाप ।

परदेश में हैं हम दूर वतन, ऐ चर्ख मुझे बरबाद न कर ।
कुछ हद भी है मुसीबत की तू हम पै सितम जल्लाद न कर ॥

आये हैं वतन को छोड़के हम घर-बारके छूटने का दिल पै है ग़म।
मारे हुये तक़दीर के हम तू हम पै सितम बेदाद न कर॥
हम हिन्द के रहने वाले हैं कुछ-मुंह से न कहने वाले हैं।
दुख दर्द के सहने वाले हैं तू हम पै सितम ईजाद न कर॥
ऐ "शमशा" मुकद्दर सोता है, रोने से भला क्या होता है।
क्यों हिन्द का नाम डुबोता है परदेश में तू फ़रियाद न कर॥

जितेन्द्र दास--गीत।

क्या लिखें आजाद होकर हम कहानी "दास" की।
दिल अगर हो सुनो दिल से कहानी "दास" की॥
फाके मस्ती में भी मस्तों की तरह वो मस्त था।
जेल में ही कट गई सारी जवानी दास की॥
शौक से दुनियां के लोगों को यही कहना पड़ा।
देश सेवा के लिये थी जिन्दगानी दास की॥

वीर गर्जना।

भारत शेर जागो बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना॥
मत बुज़िदली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने।
आख़िर तो इस अदम को होगा कभी रवाना॥
स्वातंत्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना॥

दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा ।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित ।
वालंटियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना ॥
दिल में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना ॥
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा ।
दो दिन की ज़िन्दगी है इसका नहीं ठिकाना ॥

तरानय फ़लक ।

बाग़ में सर सर का झोंका, आशियाना ले गया ।
अन्दलीबों को क़फ़स में, आबोदाना ले गया ॥
कुछ गुले गुल्चीं का शिकवा, बुल बुले भारत न कर ।
तुझको पिञ्जरे में है तेरा, चह चहाना ले गया ॥
कौन कहता है जबर्दस्ती, से हम पकड़े गये ।
जेल में खुद हमको शौके, जेलख़ाना ले गया ॥
क्यों घटा अदबार की छाये, न अहले हिन्द पर ।
खींच कर यूरोप है सब, मालो खज़ाना ले गया ॥

नौ जवान की तमना ।

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते ।
नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते ॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते ॥

ज़ुल्म करती है बहुत हिन्द पर नौकर शाही ।
उसकी बद्‌चाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवांमर्दी से ।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते ॥
जेलखाने की भी खुश होकर बढ़ायेंगे रोनक़ ।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥
मातृ भूमि के लिये जान निछावर करदें ।
सबक़ भारत को पढ़ा जायंगे मरते मरते ॥
हैं तो ना चीज़ मगर इतनी जुरअत रखते हैं ।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥
भगतसिंह, दत्त, दयानन्द, तिलक गांधी का ।
सबको फ़रमान सुना जायेंगे मरते मरते ।

वीर जीतेन्द्र की भावना ।

फ़ाके करेंगे भूख से सदमे उठायेंगे ।
रोटी ख़राब जेल की हरगिज़ न खायेंगे ॥
दारो रसन से डर के न बुज़दिल कहलायेंगे ।
मर जायेंगे क़दम को पीछे न हटायेंगे ।

हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

बैलों की तरह घास की सब्ज़ी न खायेंगे ।
कूटेंगे न हम मूँज न चर्खा चलायेंगे ॥
बन्दे बला में फंस के न गरदन झुकायेंगे ।

मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे ॥

हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
जिन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

नंगे रहेंगे धूप की सख्ती उठायेंगे ।
लेकिन न तन पै ग़ैर के कपड़े सजायेंगे ॥
कुरबानियों का मुल्क को रस्ता दिखायेंगे ।
मर मरके अपनी कौम को जिन्दा बनायेंगे ॥

हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
जिन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

शहीदों का सन्देश

दिन खून का हमारे प्यारो ! न भूल जाना ।
खुशियों में अपनी हम पर आंसू बहाते जाना ॥
सय्याद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलयान बाग में हम ।
सूनी पड़ी कब्र पर दीया जलाते जाना ॥
हिन्दू और मुसलिमों की, होती है आज होली ।
बहते हमारे रंग में दामन भिगोते जाना ॥
कुछ कैद में पड़े हैं हम कब्र में पड़े हैं ।
दो बूंद आंसू इन पर 'प्रेमी' बहाते जाना ॥

शहीदों के खूं का असर

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना ॥

झुका देंगे गरदन को हम ज़ेरे खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदगर्ज़ गोली चलाते हैं हम पर।
तो क़दमों पै उनका ही सर देख लेना॥
जो नख्ल हमने सींचा है खूने जिगर से।
वह होगा कभी बारबर देख लेना॥
किनारे पर आये भंवर से वह किश्ती।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना॥
बलायें ये जायेंगी खुद सर नगूं हो।
नहीं होगी इनकी गुज़र देख लेना॥
खुजन्दी हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
छपेगी यह एक दिन खबर देख लेना॥

आवाहन

कसली है कमर अब तो कुछ करके दिखा देंगे।
आज़ाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे॥
हटने के नहीं पीछे डर के कभी ज़ुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बे-शस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चर्खे का।
चर्खे से ज़मीं क्या हम तो चर्ख गुंजा देंगे॥
परवा नहीं कुछ दमकी, गमकी नहीं मातमकी।
है जान हथेली पर एक पल में गंवा देंगे॥
उफ़ तक भी ज़बां से हम हरगिज़ न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे॥

सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका ।
चलवाओ गन मशीनें हम सीना अड़ा देंगे ॥
दिलवादो हमें फांसी ऐलान दे कहते हैं ।
खूं से ही शहीदों के हम फौज बना देंगे ॥
"मुसाफिर" जो अंडमन के तूने बनाये ज़ालिम ।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे ॥

भजन ।

हम गरीबों के गले का हार बन्देमातरम् ।
देश के सर्ताज की आवाज़ बन्देमातरम् ॥
कहते कहते बेड़ियाँ पड़जायँ पैरों में भले ।
हथकड़ी का साज़ हो आवाज़ बन्देमातरम् ॥
हो बसेरा जेल में या हो शहीदो खेल में ।
गोलियों के बीच हो आवाज़ बन्देमातरम् ॥
तोप से घायल करें या बम्ब से मारें मगर ।
मरते मरते भी हो ये आवाज़ बन्देमातरम् ॥
आरज़ू मिन्नत यही है प्रार्थना भगवन् यही ।
चख़ में चौचन्द हो आवाज़ बन्देमातरम् ॥

भजन ।

है वतन के वास्ते अकसीर बन्देमातरम् ।
देश के ख़ादिम की है जागीर बन्देमातरम् ॥
ज़ालिमोंको है अगर बन्दूक पर अपनी ग़रूर ।
है इधर हम बेकसों का तीर बन्देमातरम् ॥

क़तल की धमकी न दे हमको हमारे सब्र से।
सैश पर हो जायगी तहरीर बन्देमातरम् ॥
किस तरह भूलूं इसे मैं जबकि क़िस्मत में मेरी।
लिख चुका है राक़िं में तहरीर बन्देमातरम् ॥
फ़िक्र क्या जल्लाद ने गर क़त्ल पर बांधी कमर।
रोक देगी दूर से शमशीर बन्देमातरम् ॥
ज़ुल्म से गर कर दिया ख़ामोश मुझको देखना।
बोल उठेगी फिर मेरी तस्वीर बन्देमातरम् ॥
ऐ शहीदे मुल्क-मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैर की महफ़िल में है॥
संतरी भी मुज़तरिब थे जब कि हर झंकार में।
बोलती थी जेल में जंजीर बन्देमातरम् ॥

आज़ादी का दीवाना।

बजाया जिसने आज़ादी का डंका है ज़माने में।
वही गांधी हमारे वास्ते है जेलख़ाने में ॥
यह सोचा लौर्ड इर्विन ने है सत्याग्रह के बारे में।
कि आन्दोलन घटेगा अब तो गांधी के फसाने ॥
मगर यह जानलो दिल में कि पकड़ा एक गांधी है।
यहां तो कोटि बत्तीस गांधी अबतो हैं ज़माने में ॥
वतन के वास्ते अब हम लड़ेंगे जंग आज़ादी।
लिखी हैं जेल की रोटी हमारे आबोदाने में ॥
हमें तो शर्म आती है कि चर्खा ही चलाने में।
हमारे ही लिये है आज गांधी जेलख़ाने में ॥
या तो ये जान ही जायेगी या फिर होगी आज़ादी।
कसर "बेदिल" न रक्खेगा मुकद्दर आज़माने में ॥

मुद्रक—बाबू सूरजभान गुप्त केसरी प्रेस, बेलनगंज आगरा।